Article - Hindi 2018-19

ISSN-2250-2335

समीचीन

(साहित्य-समाज-संस्कृति और राजनीति के खुले मंच की अर्द्ध वार्षिक-अव्यावसायिक पत्रिका)

श्रवणकुमार गोस्वामी के रचनाओं पर केन्द्रित

22

वर्ष - 12 ■ अकं - 22 ■ जनवरी-जून - 2019 ■ मूल्य ५० रुपए ■ पूर्णांक 61

संपादक - देवेश ठाकुर

Certified as
TRUE COPY

Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai-400086.

समीचीन

(साहित्य-समाज-संस्कृति और राजनीति के खुले मंच की अर्द्ध वार्षिक-अव्यावसायिक पत्रिका)

प्रबंध संपादिका :
डॉ. रोहिणी शिवबालन

संपादक-प्रकाशक :
डॉ. देवेश ठाकुर

संयुक्त संपादक :
डॉ. सतीश पांडेय

उप-संपादक :
डॉ. प्रवीण चंद्र बिष्ट

संपादकीय-संपर्क :
बी-23, हिमालय सोसाइटी, असल्फा,
घाटकोपर (पश्चिम), मुंबई-400 084
टेलिफोन : 25161446
Email : sameecheen@gmail.com

विशेष :

'समीचीन' में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार संबद्ध रचनाकारों के हैं। संपादक-प्रकाशक की उनसे सहमति आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का न्याय-क्षेत्र मात्र मुंबई होगा। सभी पदाधिकारी पूर्णरूप से अवैतनिक।

विद्वत परीक्षक मंडल:(Peer Review Team)

1. **डॉ. शरेशचंद्र चुलकीमठ**
   पूर्व अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
   कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड़
2. **डॉ. अरुणा दुबलिश**
   पूर्व प्राचार्य, कनोहरलाल महिला
   स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मेरठ (उ. प्र.)
3. **डॉ. पुष्पारानी**
   अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
   कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय,
   कुरुक्षेत्र, हरियाणा
4. **डॉ. नरेंद्र मिश्र**
   हिंदी विभाग,
   जयनारायण व्यास, विश्वविद्यालय, जोधपुर

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक : देवेश ठाकुर ने प्रिंटोग्राफी सिस्टम (इंडिया) प्रा. लि., 13/डी, कुर्ला इंडस्ट्रियल एस्टेट, नारी सेवा सदन रोड, नारायण नगर, घाटकोपर (प.), मुंबई-400086 में छपवाकर बी-23, हिमालय सोसाइटी, असल्फा, घाटकोपर (प.), मुंबई-400084 से प्रकाशित किया।

संपादक : **देवेश ठाकुर**

वर्ष-12, मूल्य - 50 रुपए अंक-22, पूर्णांक-61

सहयोग : एक प्रति रु. 50 /-, **वार्षिक** रु.100/-, **पंच वार्षिक** रु.500/-, **आजीवन सदस्यता** रु. 5000/-

Certified as
TRUE COPY

Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai-400086.

इस अंक में

	पृष्ठ
☐ अपने तईं	5
☐ परिचय : डॉ. श्रवणकुमार गोस्वामी	15
☐ एक लेखक, एक पिता, एक पति-सुजाता राज़ी	18
☐ श्र. कु. गो.-मेरे बंधु, मेरे सखा-अशोक प्रियदर्शी	23
☐ आज़ादी के बाद का इतिहास टटोलते एक संवेदनशील मन के चुभते दंश : डॉ. सतीश पांडेय	29
☐ सृजनशीलता का वह पक्ष, जिसने मुझे गोस्वामीजी पर लिखने के लिए प्रेरित किया-रतन वर्मा	36
☐ जंगलतंत्रम एक विश्लेषण-डॉ. अरुणा दुबलिश	45
☐ 'केंद्र और परिधि' बरक्स शहरी गिद्ध-डॉ. शीतला प्रसाद दुबे	52
☐ कथाकार गोस्वामी का सृजनवृत और चक्रव्यूह-डॉ. विद्या भूषण	58
☐ समकालीन अभिव्यक्ति : एक टुकड़ा सच-डॉ. उषा मिश्र	63
☐ मेरे मरने के बाद : एक हिंदी साहित्यकार के त्रासदीपूर्ण जीवन के परिप्रेक्ष्य में....-प्रा. प्रदीप जटाल	71
☐ अजानी दुनिया की कथा है : हस्तक्षेप-डॉ. अनिल सिंह	81
☐ सार्वजनिक उद्योगों की बदहाली और राहु-केतु उपन्यास-डॉ. कृष्णकुमार श्रीवास्तव	85
☐ दर्पण झूठ न बोले-डॉ. उमेश शुक्ला	90
☐ क्या आपके भीतर भी छिपा है कोई 'आदमखोर'-डॉ. महेश दबंगे	100
☐ दरकते रिश्तों के बीच सेतु-डॉ. मिथिलेश शर्मा	108
☐ राजनेताओं के छल-छद्म का यथार्थ चित्रण-डॉ. श्यामसुंदर पाण्डेय	113
☐ भारत बनाम इंडिया-उपन्यास में ग्रामीण एवं शहरी जीवन-डॉ. उमाशंकर पाल	118
☐ बहुआयामी जीवन की एकांकी : सोमा-डॉ. सतीश पांडेय	122
☐ समय के बहाने समय को व्यक्त करता नाटक-डॉ. प्रवीण चंद्र बिष्ट	127
☐ भारत बनाम इंडिया-उपन्यास में ग्रामीण एवं शहरी जीवन-डॉ. वैशाली दबंगे (खेडकर)	132
☐ श्रवणकुमार गोस्वामी के प्रहसन का यथार्थ-डॉ. सत्यवती चौबे	140

Certified as
TRUE COPY

Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai-400086.

दरकते रिश्तों के बीच-सेतु

डॉ. मिथिलेश शर्मा

'सेतु' श्रवण कुमार गोस्वामी जी का दूसरा उपन्यास है। इस उपन्यास को पढ़ कर ऐसा लगता है कि गोस्वामी जी ने सिनेमा जगत को बहुत करीब से देखा और महसूस किया। इस उपन्यास के प्रमुख दो पात्र हैं, अमर और रचना। ये दोनों पात्र फिल्मी दुनिया के अभिनेता-अभिनेत्री हैं। यह उपन्यास अपने संवादों के माध्यम से फिल्म जैसी ही अनुभूति प्रदान करता है। उपन्यास को पढ़कर हमें ऐसा लगता है कि यह अन्य फिल्मी हस्तियों के जीवन से जुड़ा होगा पर ऐसा नहीं है। इस उपन्यास की पृष्ठभूमि कतई फिल्मी नगरी नहीं है फिर भी इसके नायक-नायिका फिल्म में काम करने वाले अभिनेता अभिनेत्री हैं। इसकी कथा भूमि पूर्णतः दांपत्य जीवन पर आधारित है। उपन्यास की कथा कुछ इस प्रकार है- अमर फिल्मों का सफल अभिनेता है, लड़कियाँ इस पर मरती-मिटती हैं। ४५ वर्ष का अमर अभी तक अविवाहित है। अमर और उसकी प्रथम प्रेमिका 'रूपसी' की फिल्मों में हिट जोड़ी थी। दर्जनों फिल्में दोनों ने साथ में की थीं। अनेक पत्र-पत्रिकाओं में उनके रोमांस के चर्चे छपते थे, लोग उनकी जोड़ी की खूब सराहना करते थे। 'दोनों ने मुक्त अभिनय का ऐसा उदाहरण पेश किया कि लोग यह विश्वास करने लगे कि इन दोनों का विवाह निश्चित है।' (सेतु- पृष्ठ-१५) तभी 'रूपसी' ने एक विदेशी उद्योगपति के इकलौते बेटे से विवाह कर लिया इसका पूवार्भास अमर को भी नहीं था। 'अमर' को इस घटना ने कुछ समय के लिए असंतुलित कर दिया और यहाँ तक की अमर ने एक वर्ष के लिए फिल्मों से संन्यास ले लिया। एक वर्ष पश्चात अपने आप को संभालते हुए उसने फिल्मों में काम शुरू किया। तभी, उसने निश्चय कर लिया कि वह किसी से विवाह नहीं करेगा। इस घटना के दस वर्ष बाद भी अमर के लिए खूब रिश्ते आए पर अमर ने उनकी तरफ ध्यान नहीं दिया। उस समय अमर की उम्र करीब ४०-४२ की रही होगी। अब पत्र-पत्रिकाओं ने अमर के विवाह की 'अटकलबाजियाँ' और रोमांटिक कथाओं का प्रकाशन भी स्थगित कर दिया था। अमर के बारे में लोगों का ऐसा विश्वास हो गया कि 'अब वह कभी विवाह नहीं करेगा।' पर, रचना को समीप से देखने पर अमर के मन में पुनः वह भावना जागी जिसे उसने कभी बड़ी निष्ठा से दबा दिया था।

अमर रचना से पच्चीस वर्ष बड़ा है। दोनों ही फिल्मी जगत से जुड़े हैं। अमर ४५

वर्ष का होने के बावजूद फिल्मों का सफल नायक है। रचना बीस वर्ष की है, अभी-अभी उसका 'फिल्मी कैरियर' अमर की नायिका के रूप में शुरू हुआ है। दोनों एक दूसरे के समीप आते हैं पर अभी तक रचना एक सफल अभिनेता के रूप में उसका आदर करती है। अमर उसके अभिनय की खूब तारीफ करता है तो रचना कहती है,'आपकी बातों को मैं आशीर्वाद स्वरूप ग्रहण करती हूँ।'(सेतु पृ-७)

इसके बाद अमर लगातार रचना के पिता प्रोफेसर मनमोहन जी से बातें करना शुरू कर देता है तब प्रोफेसर साहब को भी कहीं ऐसा अनुभव होता है कि अमर के मन में रचना के प्रति प्रेम या उससे विवाह का विचार तो नहीं है। प्रोफेसर साहब भी 'फिल्म नगरी'के ऊँच-नीच से भली-भाँति परिचित थे। उन्हें मालूम था कि रचना उस 'फिल्मी गगन तारिका' में अपना स्थान किसी की छत्र-छाया में बिना किसी रुकावट के तभी बना सकती है जब अमर जैसा साथी उसके जीवन में आ जाए। ऐसा कदापि नहीं है कि प्रोफेसर साहब को उनकी उम्र के अंतराल का अंदाजा नहीं था। रचना द्वारा पूछे जाने पर वह कहते हैं कि, 'तुमने ठीक ही पूछा है। मुझे भी डर था कि मेरे सोचने के ढंग पर तुम्हें आश्चर्य होगा। परंतु तुम्हारे भविष्य को ध्यान में रखकर ही मैंने ऐसा सोचा है। मुझे गलत मत समझना।' (सेतु, पृष्ठ-१२)

रचना ने अपने पिता के प्रस्ताव पर और 'फिल्म इंडस्ट्री' के बारे में खूब विचार किया। जहाँ, कदम-कदम पर निर्माता भूखे भेड़िए बने बैठे हों वहाँ बिना किसी सहारे के अपनी मंजिल तय करना कठिन ही नहीं नामुमकिन है। वह अपने आप से प्रश्न करती है, 'पर, तू यह भी सोच ले कि क्या अकेले तू फिल्म में आगे बढ़ सकती है... यहाँ तो सभी वासना के कीड़े हैं... लोग पहले शरीर की बात करते हैं, फिर अभिनय की...।' (सेतु-पृ-१३) रचना की सहमति के बाद जब प्रोफेसर साहब ने अमर से इस विवाह के लिए कहा तो अमर ने एक शर्त रख दी कि 'रचना को विवाह के बाद अभिनय छोड़ना होगा' क्योंकि, अमर फिल्मी दुनिया की चकाचौंध से पूर्णतः परिचित था। उसका विश्वास था कि, 'कोई भी अभिनेत्री सफल पत्नी प्रमाणित नहीं हो पाती।' (सेतु, पृष्ठ-18) किंतु, रचना तो अपना फिल्मी कैरियर बनाने के लिए ही इस विवाह के लिए तैयार हुई थी। उसने भी अमर के सम्मुख एक शर्त रख दी कि, अमर को भी अभिनय छोड़ना होगा। अमर अपनी बात पर अडिग रहा और रचना भी। तब प्रोफेसर साहब ने बीच का रास्ता निकाला और कहा-'यदि तुम दोनों यह निश्चय कर लो कि किसी भी फिल्म में तुम दोनों एक साथ ही काम करोगे, तो मेरे जानते तुम लोगों का संकट दूर हो जाएगा।' (सेतु, पृ-१९)

इस शर्त को दोनों ने स्वीकार किया और प्रणय सूत्र में बंध गए। कुछ समय तक दोनों की जोड़ी को लोगों ने खूब पसंद किया एक बार अमर को मीनाक्षी पत्रिका के संपादक से यह पता चलता है कि इस वर्ष का सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री पुरस्कार रचना को प्रदान किया

Certified as TRUE COPY
Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai-400086.

Certified as
TRUE COPY
Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai-400086.

जाएगा और अभिनेता का पुरस्कार किसी दूसरे को यह सुनकर अमर के मन में द्वेष का भाव जाग उठता है। और रचना के आग्रह पर भी अस्वस्थ हो जाने का बहाना बनाकर वह पुरस्कार वितरण समारोह में नहीं जाता है। इस घटना के बाद अमर के जीवन में एक भयंकर तूफान आ जाता है। जब फिल्म निर्देशक भाखरी साहब अभिनेत्री के लिए रचना को रखते हैं। और फिल्म में अभिनेता के लिए महेंद्र को साइन करवाते हैं। तब रचना भाखरी साहब से कहती है कि,'हम दोनों किसी भी चित्र में एक साथ ही काम करते हैं।' (सेतु-पृ-४६) इस पर भाखरी कहता है कि, हम अमर को नायिका के बाप की भूमिका देंगे और उनके रेट के अनुसार ही उनको वही रकम देंगे। यह सुनकर अमर को भाखरी साहब और पिंटू पर बहुत क्रोध आता है। बाद में, उसे अहसास होता है कि सचमुच अब उसकी उम्र हीरो बनने योग्य नहीं रही है। और तब अमर के मन में पिता बनने की भावना जागृत होती है वे रचना से निवेदन करता है कि 'तो मैं तुमसे एक संतान की भीख माँगता हूँ।' उस पर रचना का जवाब होता है कि,'मैं माँ बनने को तैयार हूँ लेकिन अभी नहीं।' (सेतु-पृ ५२) रचना को मालूम है कि माँ बनने के बाद उसका फिल्मी कैरियर लगभग समाप्त हो जाएगा और वह अपनी मंजिल के करीब आकर किसी भी प्रकार की कुबार्नी देना नहीं चाहती। अमर रचना को उसके वायदे का भी स्मरण करवाता है जिसे सुनकर रचना कहती है,'देखिए, अब तो मेरी उन्नति होने लगी है। लोग मेरी प्रतिभा का सम्मान कर रहे हैं। क्या आप चाहेंगे कि आपकी रचना बीच मझधार में ही डूब जाए?'... मैंने जो साधना की, उसका परिणाम अब सामने आ रहा है। इस स्थिति में यदि मैं अभिनय छोड़ भी दूँ तो मेरी आत्मा मुझे कभी भी माफ न कर सकेगी। आपके साथ रहकर मैंने अभिनय को अपने जीवन का अभिन्न अंग बना लिया है। इसके अभाव में शायद मैं...' (सेतु-पृ-५२)

इस प्रकार रचना अभिनेत्री बनी रहने की चाह में ना तो स्वयं माँ का सुख पाती है, ना अमर को पिता बनने का सुख दे पाती है और ना ही प्रोफेसर साहब को नाना बनने का। बल्कि फिल्मों के प्रति उसका आकर्षण इतना बढ़ जाता है कि 'अंग प्रदर्शन' के दृश्य देने में भी उसे कोई एतराज नहीं होता। अभिनेता महेंद्र के साथ उसके रोमांस के चर्चे अनेक पत्र-पत्रिकाओं में छपते हैं। जिसे पढ़कर रचना के पिता रचना को फटकार भरा पत्र लिखते हैं लेकिन रचना पर पिता के पत्र का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। अमर के पुनः प्रयास पर रचना कहती है कि,'आप दूसरी शादी कर लें'(सेतु- पृ-७९)

इस पूरे उपन्यास में रचना और महेंद्र की बात-चीत से यह स्पष्ट होता है कि पूरे उपन्यास की कथा के केंद्र बिंदु दो परिवार हैं जिसमें एक अमर और रचना का है तो दूसरा महेंद्र और उसकी पत्नी का। महेंद्र की पत्नी अभिनेत्री नहीं है पर उसका भरा पूरा परिवार है, उसकी पत्नी सिर्फ एक पत्नी है। दूसरा परिवार अमर और रचना का है जहाँ दोनों ही काम करते हैं, दोनों नायक व नायिका हैं जिसमें रचना अधिक महत्वाकांक्षी है।

यही उनके दांपत्य जीवन के बिखराव का कारण भी है।

नई कहानी और साठोत्तरी कहानी का आगमन हिंदी साहित्य में एक विमर्श के रूप में हुआ। विमर्शों का आगमन समस्याओं के आगमन से होता है, ये समस्याएँ ही विमर्शों का रूप लेती हैं। पाश्चात्य जीवनशैली, पाश्चात्य शिक्षा-व्यवस्था तथा चकाचौंध के आयात ने भारतीय जीवनशैली को काफी गहरे रूप से प्रभावित किया जिसके परिणामस्वरूप सभ्यता-संस्कृति-संस्कारों वाले इस देश के परम्परागत जीवनशैली में विकृति उत्पन्न होने लगी। इस नई चकाचौंध की संस्कृति में मानव स्वार्थ सर्वोपरि हो गया। अपनी महत्वाकांक्षा को साधने के लिए मनुष्य ने पारिवारिक रिश्तों और दाम्पत्य जीवन तक की बलि चढ़ा दी। साठ के दशक तथा उसके बाद के भारत की सामाजिक-पारिवारिक व्यवस्था में इस नव्यतम वैयक्तिक स्वार्थपरता का रुझान परिलक्षित होता है जिसका प्रभाव हिंदी साहित्य में भी दिखाई दिया। मन्नू भंडारी, ममता कालिया, उषा प्रियम्वदा, चित्रा मुद्गल आदि के कथा साहित्य में इस पारिवारिक-दाम्पत्य जीवन के बिखराव को बखूबी देखा जा सकता है।

श्रवण कुमार गोस्वामी के उपन्यास 'सेतु' में भी इसी वैयक्तिक स्वार्थपरता की समस्या को उठाया गया जिसमें हरेक व्यक्ति अपने स्वार्थ को साधता नजर आ रहा है। रचना के पिता अपनी जिम्मेदारी से मुक्त होना चाहते हैं तो रचना एक प्रसिद्ध नायक के कंधे पर पैर रखकर चकाचौंध की दुनिया में अपना परचम लहराना चाहती है, वहीं अमर अपने अधेड़ उम्र में एक कमसिन लड़की से विवाह के सपने को साकार करने की जद्दोजहद करता नजर आ रहा है। अतिवैयक्तिक चेतना की इस भागदौड़ में यदि कुछ खो रहा है तो वह है पारिवारिक दाम्पत्य जीवन के रिश्ते। साठ के दशक से लगातार विकसित होते भारतीय समाज में रिश्ते निरंतर छीजते जा रहे हैं। उपन्यास में कथा कलात्मक मोड़ तब लेती है जब रचना का कैरियर भी ढलान पर आता है और उसे किसी एक फिल्म में माँ की भूमिका निभाने का प्रस्ताव मिलता है, उसे अहसास होता है कि अव्वल बनने की जिस भागमभाग में उसने अपने पति को पति का दर्जा नहीं दिया, माँ नहीं बनी, उस भागमभाग में असल में वह कितना पीछे छूट गई है।

उत्तर आधुनिक युग भारत में नई चेतना, नये विमर्शों को लेकर आता है। विज्ञान के इस युग में जो नयी समस्याएँ नये विमर्शों का रूप ले रही हैं, उनमें परम्परागत विकास दृष्टिगोचर हो रहा है। साठ से नब्बे के दशक में जो समस्याएँ पल्लवित-पोषित हो रही थीं, उत्तरआधुनिकता उन सभी को नई परिस्थिति के आधार पर भयावह साँचे में ढालने का कार्य कर रही है। पाश्चात्य जीवनशैली, मॉल संस्कृति तथा चकाचौंध के उत्तर आधुनिक रूप में मानव स्वार्थी और महत्वाकांक्षी बनता जा रहा है। यही कारण है कि शिक्षा ग्रहण कर अपने अधिकारों को समझकर उत्तराधुनिक स्त्री आत्मनिर्भर बन गई। दाम्पत्य जीवन

में बिखराव का यही प्रमुख कारण था। सेतु उपन्यास में रचना इसी आत्मनिर्भरता के कारण अमर से दूसरे विवाह के लिए कहती है। सफलता का नशा जब सिर चढ़कर बोलता है तब व्यक्ति को किसी की आश्यकता नहीं होती किंतु जब व्यक्ति इन ऊँचे उड़ानों से जमीन पर गिरता है तब उसे अहसास होता है कि सफलता क्षणिक तथा रिश्ते शाश्वत होते हैं, जिन्हें छोड़ा नहीं जा सकता। क्षणिक खुशी के लिए शाश्वत सत्य को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता और न ही उसके बिना रहा जा सकता है। जीवन में ये उतार-चढ़ाव लगभग हरेक के जीवन में आता है और जब इस सफर में इस सत्य का ज्ञान होता है तब पश्चताप के सिवा और कुछ नहीं रह जाता। सेतु उपन्यास में रचना को जब इस सत्य का बोध होता है, तब वह कहती है, 'बस, हम दोनों ऐसे ही दो गाँव हैं, जो एक-दूसरे के समीप कभी नहीं आ सके, क्योंकि हमारे बीच कोई सेतु नहीं है। मेरा जीवन निरर्थक है। मैं अधूरी हूँ। अब मैं इसी प्रकार अकेली और कटकर जीना नहीं चाहती हूँ।' (सेतु-पृष्ठ-१०५) कहा जाता है कि बुद्धि और हृदय के सामंजस्य से ही जीवन में आनंद की स्थापना होती है। रचना और अमर अपने जीवन में सफल भी होते हैं और यहीं से 'अभिनव कला मंदिर' के रूप में रचना और अमर आनंद का आस्वादन करते हैं। निरंतर उतार-चढ़ाव के बाद उनके जीवन में अंततः स्थिरता आ जाती है। मेरी दृष्टि में बुद्धि और हृदय के इसी सामंजस्य को दिखाना ही लेखक का लक्ष्य हो सकता है।

हिंदी विभागाध्यक्ष
आर.जे. कॉलेज
घाटकोपर, मुंबई (प.)

■■■

Certified as
TRUE COPY

Principal
Ramniranjan Jhunjhunwala College,
Ghatkopar (W), Mumbai-400086.